



आजता दर्पण

त्रैमासिक ई - सूचना पत्र (जून - 2026)



संरक्षक

श्री प्रदीप कामले
मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़

संपादक

श्री रणजीत कुमार
प्रभारी राजभाषा अधिकारी/नांदेड़

मार्गदर्शक

श्री सी एच कल्याण राजू
अपर मंडल रेल प्रबंधक/नांदेड़

सहयोग

श्री मुकेश साव
कनिष्ठ अनुवादक/नांदेड़

मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 77^{वीं} तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 18.03.2026 को मंडल रेल प्रबंधक की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन राजभाषा विभाग, नांदेड मंडल द्वारा मंडल रेल प्रबंधक सभागृह में किया गया। बैठक की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रदीप कामले ने की। बैठक का उद्देश्य नांदेड मंडल में राजभाषा हिंदी के

प्रगतिशील प्रयोग, कार्यान्वयन की समीक्षा तथा राजभाषा अधिनियम एवं नियमों के प्रभावी अनुपालन को सुनिश्चित करना रहा। इस बैठक के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा हिंदी में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई तथा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।



मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का दृश्य

मेडिटेशन एवं हैप्पीनेस कार्यक्रम का आयोजन

नांदेड मंडल के अंतर्गत दिनांक 23.03.2026 से जीवनशैली से संबंधित विभिन्न सत्र आयोजित 01.04.2026 तक रेलवे इंस्टीट्यूट में मंडल रेल किए गए। विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा कर्मचारियों को प्रबंधक/नांदेड के मार्गदर्शन में कर्मचारियों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए 10 दिवसीय “मेडिटेशन एवं हैप्पीनेस प्रोग्राम” का



दैनिक जीवन में मानसिक संतुलन बनाए रखने एवं कार्यक्षमता बढ़ाने के उपाय बताए गए। मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने अपने संदेश में कहा कि

आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मंडल के स्वस्थ एवं प्रसन्न कर्मचारी ही संगठन की विभिन्न विभागों के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक वास्तविक शक्ति होते हैं। ऐसे कार्यक्रम कर्मचारियों सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान ध्यान, योग, में सकारात्मक ऊर्जा, आत्मविश्वास एवं कार्य के तनाव प्रबंधन, सकारात्मक सोच तथा स्वस्थ प्रति उत्साह बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं।



रेल कर्मचारियों के लिए मेडिटेशन एवं हैप्पीनेस कार्यक्रम के दौरान ली कुछ झलकियां



डॉ. भीमराव अंबेडकर की 135^{वीं} जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन

डॉ. भीमराव आंबेडकर की 135^{वीं} जयंती के उपलक्ष्य में दिनांक - 15.04.2026 को नांदेड़ मंडल कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा की गई, जिसमें मंडल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की. कार्यक्रम का शुभारंभ भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के



डॉ भीमराव अंबेडकर की 135^{वीं} जयंती कार्यक्रम का दृश्य

चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया. इस अवसर पर वक्ताओं ने डॉ. आंबेडकर के जीवन, उनके संघर्ष, संविधान निर्माण में उनके अतुलनीय योगदान तथा सामाजिक समानता एवं न्याय के प्रति उनके विचारों पर प्रकाश डाला. मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि डॉ. आंबेडकर के आदर्श आज भी समाज को दिशा प्रदान करते हैं. उन्होंने सभी कर्मचारियों से बाबा साहेब के बताए मार्ग पर चलने तथा अपने कार्यों में ईमानदारी, समानता एवं सेवा भावना को अपनाने का आह्वान किया. कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने डॉ. आंबेडकर के सिद्धांतों को आत्मसात करने तथा सामाजिक समरसता एवं राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया.

**हिंदी है भारत की पहचान,
राजभाषा से बड़े राष्ट्र का सम्मान।**

**कार्यालय का यही अभियान,
हिंदी बने कार्य की पहचान।**

दक्षिण मध्य रेलवे के नांदेड मंडल अंतर्गत रेलवे इंस्टीट्यूट में “रेल सेवा पुरस्कार-2025” समारोह का भव्य आयोजन किया गया. कार्यक्रम मंडल रेल प्रबंधक महोदय की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ, जिसमें मंडल के अधिकारीगण, पर्यवेक्षक एवं बड़ी संख्या में कर्मचारी उपस्थित रहे. कार्यक्रम का उद्देश्य रेलवे कर्मचारियों द्वारा अपने कार्यक्षेत्र में उत्कृष्ट सेवा, कर्तव्यनिष्ठा एवं समर्पण भाव से किए गए कार्यों को सम्मानित करना था. इस अवसर पर विभिन्न विभागों के चयनित कर्मचारियों को प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार

प्रदान कर सम्मानित किया गया. अपने संबोधन में मंडल रेल प्रबंधक महोदय ने पुरस्कृत कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि रेलवे की प्रगति एवं सुरक्षित संचालन में प्रत्येक कर्मचारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. उन्होंने सभी कर्मचारियों से इसी समर्पण एवं प्रतिबद्धता के साथ कार्य करते रहने का आह्वान किया. समारोह के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम को और अधिक आकर्षक एवं उत्साहपूर्ण बना दिया. कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ.



नांदेड मंडल के अंतर्गत विशिष्ट कार्य करने वालों को रेल सेवा पुरस्कार 2025 के दौरान सम्मानित करने का दृश्य

विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजित

नांदेड मंडल के सभागृह में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में 15 मई से 5 जून तक विभिन्न पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों का आयोजन किया गया. इस अभियान का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा हरित वातावरण को प्रोत्साहित करना है. कार्यक्रम के अंतर्गत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण के महत्व पर अवसर पर सभी उपस्थित सुरक्षित रखने तथा “एक व्यक्ति लेते हुए शपथ ग्रहण की. कहा कि पर्यावरण संरक्षण वर्तमान



है तथा प्रत्येक व्यक्ति की छोटी-सी पहल भी प्रकृति को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है. नांदेड मंडल द्वारा इस अवधि में वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान एवं जन-जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से हरित एवं स्वच्छ वातावरण के निर्माण का संदेश दिया जा रहा है.

पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता एवं जागरूकता संदेश दिए गए. इस कर्मचारियों ने पर्यावरण को - एक पेड़” लगाने का संकल्प अधिकारियों ने अपने संबोधन में समय की सबसे बड़ी आवश्यकता

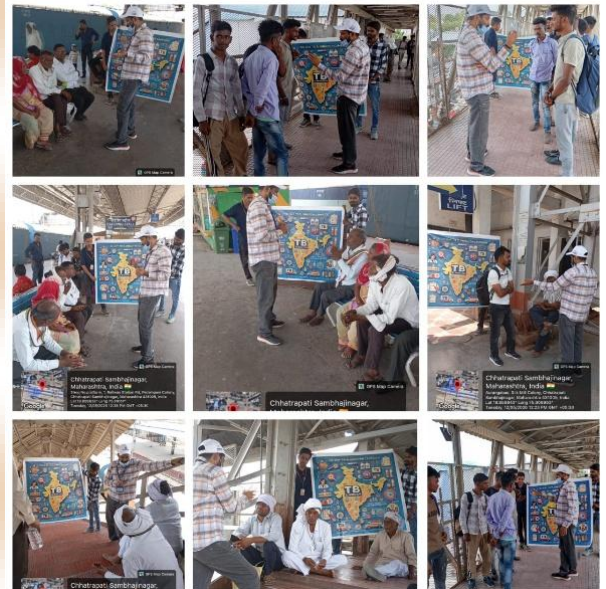


विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शपथ ग्रहण एवं वृक्षारोपण का दृश्य

नांदेड रेलवे स्टेशन पर आयोजित टीबी दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत नांदेड रेलवे स्टेशन पर हाल ही में आयुष्मान आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 50 लोगों के स्वास्थ्य की जांच की गई। यह शिविर आयुष्मान 100 दिवस टीबी अभियान के दूसरे चरण के तहत आयोजित हुआ, जिसमें रेलवे चिकित्सा विभाग और महानगर पालिका के टीबी विभाग का महत्वपूर्ण

सहयोग रहा। कार्यक्रम का आयोजन नांदेड मंडल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, डॉ एमके श्रीनिवास के निर्देशानुसार किया गया। इस अवसर पर शिविर के संचालन में मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक नवल कुमार और स्वास्थ्य निरीक्षक ज्ञान प्रकाश गुप्ता की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस शिविर में लगभग 50 लोगों की स्वास्थ्य जांच की गई।



टीबी दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन की झलकियां



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल॥

भारतेंदु हरिश्चंद्र

लू एवं गर्मी से बचाव हेतु ओआरएस पैकेटों का वितरण

भीषण गर्मी एवं तेज धूप के मद्देनजर नांदेड़ मंडल के रेलवे कॉलोनी तथा नांदेड़ रेलवे स्टेशन पर कार्यरत गेंगमैन, प्वाइंट्समैन एवं हाउसकीपिंग कर्मचारियों को चिकित्सा विभाग की ओर से ओआरएस (ORS) पैकेट वितरित किए गए। यह कार्यक्रम श्री नवल कुमार, मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों को लू एवं गर्मी से बचाव के उपायों की जानकारी दी गई तथा पर्याप्त मात्रा में पानी पीने, ओआरएस का सेवन करने एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक सावधानियां अपनाने की सलाह दी गई। चिकित्सा विभाग द्वारा की गई इस पहल का उद्देश्य फील्ड में कार्यरत कर्मचारियों के स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा गर्मी के मौसम में उन्हें स्वस्थ एवं सुरक्षित बनाए रखना है। कर्मचारियों ने इस जनहितकारी पहल के लिए चिकित्सा विभाग के प्रति आभार व्यक्त किया।



लू एवं गर्मी से बचाव हेतु ओआरएस पैकेटों का वितरण करते हुए का दृश्य



अग्निशामक सप्ताह - 2026 के अंतर्गत जागरूकता कार्यक्रम

अग्निशामक सप्ताह-2026 के अवसर पर 14 से 20 अप्रैल तक नांदेड़ मंडल के चिकित्सा विभाग द्वारा अग्नि सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अग्नि दुर्घटनाओं के संभावित कारणों, उनसे बचाव के उपायों तथा आपातकालीन परिस्थितियों में अपनाई जाने वाली सावधानियों की जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम में उपस्थित कर्मचारियों ने अग्नि सुरक्षा संबंधी जानकारी को अपने दैनिक कार्यों में अपनाने का संकल्प लिया।



अग्निशामक सप्ताह - 2026 के दौरान आपदा से बचाव के लिए दिए जाने वाले सुझाव का दृश्य

नांदेड़ स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला / राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 26.03.2026 को नांदेड़ स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला / राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 36 कर्मचारियों ने भाग लिया. इस अवसर पर प्रधान कार्यलय से आये श्री एम.के.नागराजू जी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद तथा उनके साथ श्री रणजीत कुमार, प्रभारी राजभाषा अधिकारी/नांदेड़ और राजभाषा विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे.

इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों से आये कर्मचारियों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों तथा प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में अवगत कराया गया एवं इसके साथ ही सभी कर्मचारियों को राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन किया. इस अवसर पर विभिन्न यूनिटों में राजभाषा कार्यान्वयन मर्दों का निरीक्षण भी किया गया.



नांदेड़ स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला व राजभाषा समिति की बैठक का दृश्य

जालना स्टेशन पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 22.04.2026 को जालना स्टेशन पर विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई. बैठक में कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई तथा राजभाषा संबंधी तिमाही कार्यक्रमों एवं निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन पर चर्चा की गई. इस अवसर पर पत्राचार, नोटिंग-ड्रफ्टिंग, ई-ऑफिस तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर विशेष बल दिया गया. बैठक के दौरान अधिकारियों द्वारा राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु आवश्यक सुझाव भी दिए गए तथा सभी कर्मचारियों से दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने का आह्वान किया गया. अंत में उपस्थित सदस्यों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बैठक का समापन किया गया.



राजभाषा कार्यान्वयन मदों का निरीक्षण एवं संपर्क अभियान

दिनांक 30.04.2026 को वाशिम स्टेशन पर स्थित विभिन्न यूनिटों एवं कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन मदों का जायजा लिया गया तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संपर्क किया गया. इस दौरान कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई एवं कर्मचारियों को राजभाषा नीति के अनुरूप

अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया. साथ ही पत्राचार, नोटिंग-ड्राफ्टिंग तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया. अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया.



राजभाषा कार्यान्वयन का निरीक्षण एवं संपर्क अभियान का दृश्य

छत्रपति संभाजीनगर स्टेशन पर हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनांक 19.05.2026 को छत्रपति संभाजीनगर स्टेशन पर राजभाषा के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया. इस अवसर पर हिंदी निबंध लेखन, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा हिंदी श्रुतलेखन जैसे प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. प्रतियोगिताओं का उद्देश्य कर्मचारियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि जागृत करना, उनकी भाषायी दक्षता का विकास करना तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देना था. प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी हिंदी लेखन एवं अभिव्यक्ति क्षमता का परिचय दिया. प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन निर्धारित मानदंडों के अनुसार किया गया, जिसके आधार पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों का चयन किया गया. प्रतियोगिताओं के विजेताओं को सम्मान राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा. यह सम्मान मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा आयोजित एक विशेष समारोह में प्रदान किया जाएगा. इस प्रकार के कार्यक्रम न केवल राजभाषा हिंदी के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं,

बल्कि कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित भी करते हैं. कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए प्रतिभागियों एवं आयोजकों की सराहना की गई.



छत्रपति संभाजीनगर स्टेशन पर विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का दृश्य

छत्रपति संभाजीनगर स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला / राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन

दिनांक 19.05.2026 को नांदेड़ स्टेशन पर हिंदी कार्यशाला / राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न विभागों के कुल 34 कर्मचारियों ने भाग लिया. इस अवसर पर प्रधान कार्यलय से आये श्री एम.के.नागराजू जी, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद तथा उनके साथ श्री योगेश दीपराज, वरिष्ठ अनुवादक/नांदेड़ और राजभाषा विभाग के कर्मचारी उपस्थित थे. इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों से आये कर्मचारियों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों तथा प्रोत्साहन योजनाओं के बारे में अवगत कराया गया एवं इसके साथ ही सभी कर्मचारियों को राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहन किया. इस अवसर पर एक हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों से आये कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग, हिंदी में नोटिंग-ड्राफ्टिंग तथा राजभाषा संबंधी नियमों एवं प्रावधानों की जानकारी प्रदान की गई. कार्यक्रम के दौरान सभी प्रतिभागियों को अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु प्रेरित किया गया.



हिंदी कार्यशाला / राजभाषा कार्यन्वयन समिति की तिमाही बैठक की झलकियां

परभनी स्टेशन पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक एवं विभिन्न यूनिटों का निरीक्षण

दिनांक 31.03.2026 को परभनी स्टेशन पर स्टेशन अधीक्षक महोदय की उपस्थिति में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई. बैठक में कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई तथा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक बिंदुओं पर चर्चा की गई. बैठक के उपरांत परभनी स्टेशन के विभिन्न विभागों एवं इकाइयों का निरीक्षण किया गया. इस दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न मदों, अभिलेखों, नामपट्टों, प्रपत्रों तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति का जायजा लिया गया. साथ ही अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नियमों के अनुपालन तथा दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया. निरीक्षण के दौरान संबंधित कर्मचारियों को राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु प्रेरित किया गया तथा सभी ने राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन में सहयोग का आश्वासन दिया.



परभनी स्टेशन पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजन की दृश्य

सेलू स्टेशन पर राजभाषा संबंधी विभिन्न विभागों/मदों का जायजा

दिनांक 11.06.2026 को सेलू स्टेशन पर स्थित विभिन्न यूनिटों एवं कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन मदों का जायजा लिया गया तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संपर्क किया गया. इस दौरान कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई एवं कर्मचारियों को राजभाषा नीति के अनुरूप

अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित किया गया. साथ ही पत्राचार, नोटिंग-ड्राफ्टिंग तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रभावी प्रयोग के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया. अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति सकारात्मक सहयोग का आश्वासन दिया.

**राजभाषा का दीप जलाएं,
हिंदी को व्यवहार में लाएं।**

**सरल भाषा, सरल व्यवहार,
हिंदी से होता कार्य साकार।**



आदिलाबाद स्टेशन पर राजभाषा समिति की बैठक व विभिन्न मर्दों का निरीक्षण

दिनांक 12.06.2026 को आदिलाबाद स्टेशन पर स्टेशन अधीक्षक महोदय की उपस्थिति में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई. बैठक में कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा की गई तथा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक बिंदुओं पर चर्चा की गई. बैठक के उपरांत परभणी स्टेशन के विभिन्न विभागों एवं इकाइयों का निरीक्षण किया गया. साथ ही

कर्मचारियों को राजभाषा नियमों के अनुपालन तथा दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के संबंध में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया. निरीक्षण के दौरान संबंधित कर्मचारियों को राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु प्रेरित किया गया तथा सभी ने राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन में सहयोग का आश्वासन दिया.



आदिलाबाद स्टेशन पर राजभाषा समिति बैठक व निरीक्षण का दृश्य

हिंदी कुंजीयन प्रशिक्षण

माह के दौरान मंडल कार्यालय के कार्मिक शाखा में कार्यरत कर्मचारियों से संपर्क किया गया उन्हें हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन दिया गया तथा इस अवसर पर विभागों में स्थित कंप्यूटरों में हिंदी यूनिकोड एक्टिवेट कर कर्मचारियों को हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण दिया गया.



पापा की परी

शाम के पाँच बजने वाले थे. मेरा पूरा ध्यान दीवार पर टंगी घड़ी और घर के मुख्य द्वार पर था. दिल की धड़कनें तेज़ हो रही थीं, क्योंकि पिताजी के दफ़्तर से लौटने का समय हो चुका था. तभी गेट खुलने की आवाज़ सुनाई दी. पिताजी अभी दरवाज़े से भीतर आए ही थे कि एक तेज़ चीख गूँजी—

"पापा...! भैया ने मुझे मारा...!"

बस फिर क्या था! पलक झपकने भर की देर हुई और मैं पिट चुका था. मेरा अपराध इतना ही था कि मैंने टीवी का रिमोट उससे छीन लिया था. लेकिन आखिर वह पापा की परी जो थी—मेरी छोटी बहन, सोनू.

बचपन में हम दोनों खूब झगड़ते थे. छोटी-छोटी बातों पर तकरार हो जाती, लेकिन हर बार गलती मेरी ही मानी जाती. सोनू की शिकायत और पापा की डाँट—यह तो जैसे रोज़ का नियम था. उसकी वजह से मैंने न जाने कितनी बार मार खाई होगी. उस समय मन ही मन उस पर बहुत गुस्सा आता था.

रिश्तेदार अक्सर मुस्कुराते हुए कहते थे, "अभी जितना गुस्सा करना है कर लो, लेकिन जिस दिन इसकी विदाई होगी, सबसे ज़्यादा तुम ही रोओगे." मैं उनकी बात सुनकर हँस देता था. मुझे लगता था कि ऐसा कभी नहीं होगा.

लेकिन समय कब पंख लगाकर उड़ गया, पता ही नहीं चला. देखते ही देखते वह दिन भी आ गया, जब सोनू की विदाई होनी थी. शादी की भागदौड़ और कामकाज से शरीर थक चुका था, लेकिन उससे कहीं अधिक मन बोझिल था. जब विदाई का क्षण आया, तो आँखों से आँसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे. ऐसा लग रहा था मानो बहन के साथ-साथ घर की सारी रौनक भी विदा हो रही हो.

जो घर कभी उसकी चहकती आवाज़ों से गूँजता रहता था, जहाँ हर थोड़ी देर में "पापा... पापा..." की पुकार सुनाई देती थी, आज वही घर अजीब-सी खामोशी में डूब गया था. उसकी हँसी, उसकी शरारतें, उसकी शिकायतें—सब कुछ जैसे यादों में सिमटकर रह गया.

आज जब बचपन के वे पल याद आते हैं, तो होंठों पर अनायास मुस्कान आ जाती है और आँखें भीग उठती हैं. जो लड़की कभी घर के ज़र्रे-ज़र्रे पर अपना अधिकार जताती थी, जो हर चीज़ को अपना समझती थी, वही अब कुछ दिनों के लिए मेहमान बनकर आती है और फिर चली जाती है.

तब समझ में आता है कि बहनें केवल घर की सदस्य नहीं होतीं, वे घर की आत्मा होती हैं. उनके होने से घर में जीवन होता है, और उनके जाने के बाद उनकी यादें ही घर को आबाद रखती हैं.

सच ही कहते हैं—बेटियाँ अपने पिता की परियाँ होती हैं, लेकिन अपने भाइयों के दिल का सबसे खूबसूरत हिस्सा भी होती हैं.

भरत कुमार गुर्जर

वरिष्ठ वाणिज्य निरीक्षक, नांदेड़

हिंदी साहित्य के इतिहास में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का नाम अत्यंत सम्मान और गौरव के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 3 अगस्त 1886 को उत्तर प्रदेश के झांसी जनपद के निकट चिरगांव में हुआ था। साहित्यिक प्रतिभा उन्हें अपने परिवार से विरासत में प्राप्त हुई थी। उनके पिता श्री सेठ रामचरण गुप्त धार्मिक प्रवृत्ति के थे तथा भक्ति-भाव से ओत-प्रोत रचनाएं किया करते थे। इसी वातावरण का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त पर भी पड़ा और उन्होंने हिंदी साहित्य को अनेक उत्कृष्ट कृतियां प्रदान कीं।

उनकी रचनाओं में “साकेत” एक ऐसी अमर कृति है जिसने उन्हें हिंदी साहित्य में विशिष्ट स्थान दिलाया। यह महाकाव्य रामकथा पर आधारित होते हुए भी अपने कथानक और दृष्टिकोण के कारण अत्यंत मौलिक एवं प्रभावशाली है। सामान्यतः रामायण में श्रीराम, सीता और लक्ष्मण के वनवास की कथा प्रमुख रूप से वर्णित होती है, किंतु “साकेत” में कवि ने लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला के त्याग, विरह और अंतर्मन की पीड़ा को केंद्र में रखा है।

महाकाव्य के आरंभ में श्रीराम के वनवास, अयोध्यावासियों के करुण विलाप तथा वनगमन के मार्मिक दृश्य चित्रित किए गए हैं। किंतु इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें उर्मिला के मौन त्याग और उनके विरह की वेदना का अत्यंत संवेदनशील एवं हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। जब लक्ष्मण अपने बड़े भाई श्रीराम और भाभी सीता के साथ वन चले जाते हैं, तब उर्मिला अयोध्या में रह जाती हैं। पति-वियोग में उनकी मनःस्थिति, उनके अंतर्द्वंद्व तथा उनके त्याग का जो सजीव चित्रण गुप्त जी ने किया है, वह हिंदी साहित्य में अद्वितीय माना जाता है।

“साकेत” केवल एक धार्मिक महाकाव्य नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का विराट दस्तावेज है। इसे पढ़ते समय पाठक स्वयं को कथा के साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है। कवि की भाषा, भावों की गहराई और पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण पाठक को भीतर तक झकझोर देता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो रामायण के ये सभी दृश्य उसकी आंखों के सामने सजीव हो उठें हों।

उर्मिला के विरह-वेदना का चित्रण निम्न पंक्तियों में अत्यंत प्रभावशाली रूप से व्यक्त हुआ है—

“तेरे घर के द्वार बहुत हैं,

किसमें होकर जाऊँ मैं?

सब द्वारों पर भीड़ मची है,

कैसे भीतर आऊँ मैं?”

इसी प्रकार कवि लिखते हैं—

“मानस-मंदिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,

जलती-सी उस विरह में, बनी आरती आप.”

इन पंक्तियों में उर्मिला के हृदय में अपने पति के प्रति समर्पण तथा विरह की अग्नि में उनके निरंतर जलते रहने की स्थिति का अत्यंत मार्मिक चित्रण हुआ है।

एक अन्य स्थान पर कवि कहते हैं—

“आँखों में प्रिय-मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,

हुआ योग से भी अधिक उसका विषम-वियोग.”

यहाँ उर्मिला के उस मानसिक कष्ट को दर्शाया गया है, जिसमें राजमहल के समस्त सुख-साधन भी उन्हें निरर्थक प्रतीत होते हैं।

विरह की चरम अवस्था का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं—

“आठ पहर चौसठ घड़ी, स्वामी का ही ध्यान,

छूट गया पीछे स्वयं, उसका आत्मज्ञान।”

इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है कि उर्मिला का संपूर्ण अस्तित्व अपने पति की स्मृति में विलीन हो चुका है।

“साकेत” राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की वह अमर कृति है, जिसे उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धियों में स्थान दिया। यह महाकाव्य केवल रामकथा का पुनर्पाठ नहीं, बल्कि उपेक्षित पात्र उर्मिला के माध्यम से भारतीय नारी के त्याग, समर्पण, धैर्य और संवेदनशीलता का अनुपम आख्यान है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि “साकेत” हिंदी साहित्य की एक कालजयी कृति है। इसकी भाषा सरल, भावपूर्ण और प्रभावशाली है। मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म चित्रण तथा उर्मिला के चरित्र की गरिमामयी प्रस्तुति इसे हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ महाकाव्यों की श्रेणी में स्थापित करती है। प्रत्येक साहित्य-प्रेमी के लिए यह कृति न केवल पठनीय, बल्कि संग्रहणीय भी है।

यह संस्करण पत्रिका, स्मारिका, हिंदी पखवाड़ा प्रतियोगिता अथवा पुस्तक समीक्षा लेख के रूप में प्रकाशन योग्य है।

मुकेश साव

कनिष्ठ अनुवादक

मंडल रेल प्रबंधक/का/नांदेड़

बदलाव

आये दिन अपना इजहार बदलती रहती है,

दिलों से खेलती है दिलदार बदलती रहती है।

कभी दिल्ली कभी पुणे कभी लखनऊ

ये कलम है साहब दरबार बदलती रहती है॥

ये बच्ची कंधी बेचती है पेट की खातिर,

आये दिन ये बेचारी बाजार बदलती रहती है।

आज साहब है तो गरूर मत कर

कुदरत का दस्तूर है सरकार बदलती रहती है,

कत्ल तेरा हर बार अपनो ने किया "दीपक"

फर्क इतना है कि बस हर बार तलवार बदलती रहती है॥

~ दीपक अधाना/लासूर स्टेशन



गौरैया

अपनी दुल्हन को लाने से पहले दीनू ने फूस का नया घर बनवाया था. दुल्हन के आने से पहले ही उस घर में गौरैया ने अपना बसेरा डाल दिया था. नई दुल्हन के आने पर फुदक-फुदक कर गौरैया ने भी पूरी- पकवान के खूब लुफ्त उठाए थे. दीनू के परिवार के साथ ही साथ गौरैया का परिवार भी बढ़ता गया. दीनू के चारों बेटे गौरैया के साथ ही खेल कर बड़े हुए थे. गौरैया कभी बच्चों द्वारा छींटे गए खाने को चुगती तो कभी दीनू के गोशाले में जाकर गायों के पीठ पर बैठती. गायों को डाले चारे में से दाने चुन-चुन कर खाती.

गर्मी की दोपहरी थी, काम से लौटा दीनू थका- मांदा बरामदे पर ही नीचे लेट गया. एक काला नाग बड़ी तेजी से उसी ओर आ रहा था, गौरैया जोर जोर से चीं-चीं करने लगी. दीनू की नींद ना खुलते देख गौरैया ने दीनू के बाल नोच डाले. सहसा दीनू की नींद खुली हड़बड़ा कर किसी तरह नाग से अपने आपको बचा पाया. दीनू आज भी गौरैया की यह कहानी लोगों को सुनाना नहीं भूलता.

दीनू की बीवी की असामयिक मृत्यु हो गई. चारों बेटों की शादियां कर दी गई, बहूयें आ गई .इधर कुछ दिनों से बहूओं में हमेशा खटपट होते रहती थी. चारों भाइयों ने अलग होने का फैसला लिया. फूस के घर को उजाड़ सभी ने अपने -अपने लिए पक्के के मकान बनवा लिए. दुखी गौरैया ने गांव के मुख्य सड़क के किनारे जर्जर पड़े एफसीआई के गोदाम में अपना बसेरा डाला.

परिवार से दूर गौरैया का मन ना लगता तो एक-आध बार दीनू को देखने चला आता. दीनू गोशाले में खाट डाल कर लेटा था. रेडियो पर संगीत बज रहा था. देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान. आया समय बड़ा वेढंगा, आज आदमी बना लफंगा, छल और कपट के हाथों अपना बेच रहा ईमान, कितना बदल गया इंसान.

गौरैया को देख बर्बस ही दीनू की आंखों में आंसू आ गए. दीनू निर्निमेष अनन्त की ओर देख रहा था, शायद सोच रहा था. बच्चों के घर तो बड़े-बड़े हो गए, पर दिल इतने छोटे कि इनमें नन्ही गौरैया तक के लिए भी जगह नहीं बची.

गौरैया बचाओ,

आंगन में लक्ष्मी लाओ.

आशुतोष कुमार,

वाणिज्य पर्यवेक्षक/नांदेड़

सुविचार

जिंदगी कांटो का सफर है,
हौसला उसकी पहचान है।
रास्ते पर यहां सभी चलते हैं,
जो रास्ता बनाए वही इंसान है॥

सुविचार

हम इंसानो की सोच है कि
एक अकेला क्या कर सकता है।
देख तू उस सूरज को
जो पुरी दुनिया में उजाला भर सकता है॥

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

सत्यनिष्ठा अर्थात् सत्य के मार्ग पर चलने की दृढ़ इच्छाशक्ति, सत्यनिष्ठ व्यक्ति अपना कार्य सच्चाई और ईमानदारी से करता है तथा अपने चरित्र को निर्मल रखता है. सत्यनिष्ठ व्यक्ति झूठ बोलने, चोरी करने या धोखा देने से इनकार करता है. वह अपने पेशे, व्यवसाय या पद के मानकों के प्रति सजग रहता है और सदैव ईमानदारी से व्यवहार करता है. इसके विपरीत भ्रष्टाचार अर्थात् भ्रष्ट + आचार भ्रष्ट यानी बुरा या बिगड़ा हुआ तथा आचार का मतलब है आचरण. अर्थात् भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है वह आचरण जो किसी भी प्रकार से अनैतिक और अनुचित हो. जब कोई व्यक्ति न्याय व्यवस्था के मान्य नियमों के विरुद्ध जाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए गलत आचरण करने लगता है, तो वह व्यक्ति भ्रष्टाचारी कहलाता है. भ्रष्टाचार के कई रंग-रूप हैं जैसे—रिश्वत, कालाबाजारी, जान-बूझकर दाम बढ़ाना, पैसे लेकर काम करना, सस्ता सामान लाकर महंगा बेचना आदि.

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की रिपोर्ट के अनुसार, भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक (CPI) 2025 में भारत 182 देशों की सूची में 39 के स्कोर के साथ 91वें स्थान पर है. यह ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल द्वारा हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट का नवीनतम डेटा है, जिसमें 2024 की तुलना में भारत की रैंकिंग में 5 स्थानों का सुधार हुआ है (2024 में भारत 96वें स्थान पर था). यह सूचकांक, जो विशेषज्ञों और व्यवसायियों के अनुसार सार्वजनिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार के कथित स्तर के आधार पर देशों और क्षेत्रों को रैंक करता है, 0 से 100 के पैमाने का उपयोग करता है; जहां 0 अत्यधिक भ्रष्ट और 100 बहुत साफ-सुथरा है. डेनमार्क, फिनलैंड और न्यूजीलैंड को उच्चतम स्कोर के साथ सूची में संयुक्त रूप से पहला स्थान दिया गया है. इस सूची में दक्षिण सूडान को अंतिम स्थान दिया गया है. इसका अर्थ है कि दक्षिण सूडान विश्व का सबसे ज्यादा भ्रष्ट देश है.

भ्रष्टाचार एक सामाजिक बुराई है. इससे देश की सार्वजनिक संपत्ति और संसाधनों का शोषण होता है. भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी से असमानता बढ़ती है और देश पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है. भ्रष्टाचार मुक्त भारत ही विकसित भारत का वास्तविक आधार है. सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और पारदर्शिता की संस्कृति को मजबूत बनाना ही भारत सरकार के केंद्रीय सतर्कता आयोग का प्रमुख उद्देश्य है. इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग की भागीदारी आवश्यक है. भ्रष्टाचार मुक्त जीवन के रास्ते पर आगे बढ़ने और ईमानदारी से धन अर्जित करने पर ही मानव को मानसिक शांति और उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त हो सकता है. इसके विपरीत बेईमानी से प्राप्त किया गया धन अशांति और भय निर्मित करता है. भ्रष्टाचारी व्यक्ति को सदैव पकड़े जाने का डर रहता है. इसीलिए उचित आर्थिक विकास हेतु भ्रष्टाचार के रास्ते को त्यागने में ही समझदारी है. जिस दिन प्रत्येक नागरिक भ्रष्टाचार के संबंध में सतर्क होगा, और उसके प्रशासनिक तथा सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा और ईमानदारी होगी, तभी अपना देश सही दिशा में आगे बढ़ेगा.

ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता ये केवल कहने की बातें नहीं हैं, बल्कि इन मूल्यों को जीवन में शत-प्रतिशत लागू करना आवश्यक है. इन्हीं मूल्यों के सहारे सार्वजनिक एवं प्रशासनिक जीवन में आपसी विश्वास और सौहार्द की भावना को विकसित किया जा सकता है, जिससे देश में अपराध का प्रतिशत कम हो सकता है. नैतिक मूल्यों पर चलने वाले देश के प्रशासक अपनी जनता में धर्म, जाति,

क्षेत्र और भाषा के आधार पर भेदभाव नहीं करते, न ही भाई-भतीजावाद को बढ़ावा देते हैं। भाई-भतीजावाद से अकार्यक्षम और अकुशल लोग प्रशासन में शामिल हो जाते हैं, जो जनता के काम त्वरित गति से करने में सक्षम नहीं होते। इसके विपरीत, नैतिक प्रशासक व्यक्तियों के गुणों और योग्यता (मेरिट) को महत्व देते हैं। उम्मीदवारों का चुनाव करते समय वे नियमों का शत-प्रतिशत अनुपालन करते हैं, जिसके कारण समाज में सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार नहीं फैलता, बल्कि समृद्ध और विकसित देश के निर्माण में मदद मिलती है।

वर्तमान समय में 'रिश्वत देने और एक-दूसरे को आर्थिक फायदा पहुंचाने से ही काम होता है, दुनिया में नैतिक मूल्यों का कोई स्थान नहीं है'—ऐसी गलत धारणाओं को त्याग देने में ही इंसान की भलाई है। यह दुनिया सच्चाई और ईमानदारी पर ही टिकी हुई है। व्यक्तियों के बीच की आर्थिक, प्रशासनिक और व्यापारिक गतिविधियां केवल आपसी विश्वास से ही सुचारू रूप से संपन्न हो सकती हैं, जिसके लिए पारदर्शी व्यवहार की आवश्यकता है। अन्यथा लोगों के बीच असंतोष फैल सकता है, जिसका बुरा असर लोगों पर और समूचे देश पर पड़ता है। इस वास्तविक तथ्य को स्वीकार करने में ही देश का भला निहित है।

रिश्वतखोर लोगों का हमेशा लाभ होता है, इस गलतफहमी को दूर करना आवश्यक है। रिश्वतखोरी से कुछ दिनों तक आर्थिक लाभ होता हुआ दिखाई देगा, लेकिन भविष्य में उसके भयानक परिणाम हो सकते हैं, जिसका अंदाजा भ्रष्ट व्यक्ति नहीं लगा पाता और बाद में पछतावा करता है। समाचार पत्रों में भ्रष्टाचार को उजागर करने वाली खबरों को पढ़कर हम इस बात को समझ सकते हैं। भ्रष्ट व्यक्तियों के ठिकानों पर पड़ने वाले ईडी (ED) और सीबीआई (CBI) के छापे पल भर में व्यक्ति की प्रतिष्ठा और सम्मान को खत्म कर देते हैं। बड़े-बड़े भ्रष्ट राजनेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों को भी जेल जाना पड़ता है।

इसके विपरीत, नैतिक मूल्यों के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाले समाज सुधारकों, स्वतंत्रता सेनानियों तथा समाज सेवकों आदि ने समाज को उचित दिशा प्रदान की है। महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि महान लोगों के जीवन-चरित्र से यह बात प्रमाणित हो जाती है। ईमानदारी और पारदर्शिता जैसे मूल्यों के बिना किसी भी व्यक्ति में देश के विविध जातियों और धर्मों के लोगों की भलाई के बारे में सोचने की भावना विकसित हो ही नहीं सकती।

भ्रष्टाचार की तुलना में सच्चाई और ईमानदारी से व्यवहार करना बहुत आसान होता है। भ्रष्ट व्यक्ति को एक झूठ छिपाने के लिए दूसरा झूठ बोलना पड़ता है। अपनी गलती पकड़ी न जाए, इसलिए हमेशा झूठ का सहारा लेना पड़ता है और इसी में उसकी बहुमूल्य ऊर्जा बर्बाद होती है। झूठ पकड़ा जाने पर उसे अपमानित होना पड़ता है। इसीलिए ईमानदारी के रास्ते पर चलने में ही व्यक्ति का भला निहित है।

व्यक्ति स्वयं का अतिरिक्त आर्थिक फायदा करने के लिए बेईमानी और भ्रष्टाचार के रास्ते पर चलता है। कभी-कभी जब किसी को अभाव के कारण कष्ट होता है, तब वह भ्रष्ट आचरण करने के लिए विवश हो जाता है। भ्रष्टाचार की सहायता से वह कम से कम समय में अधिक संपत्ति कमाने का शॉर्टकट रास्ता ढूंढ निकालता है। लेकिन वह भूल जाता है कि हमें मंजिल पर पहुंचने के लिए सच्चाई के सीधे रास्ते पर चलना जरूरी है। शॉर्टकट रास्ता तो सीधे जेल भी पहुंचा सकता है।

सच्चाई और ईमानदारी के सीधे रास्ते पर चलने में ही असली होशियारी है. सच्चाई का सीधा मार्ग तनाव और चिंतारहित मार्ग है. भ्रष्टाचार के मार्ग पर चलने से प्राप्त होने वाली आर्थिक संपत्ति कभी भी तनावमुक्त नींद और चिंतामुक्त जीवन जीने नहीं देती. इसीलिए किसी भी व्यक्ति का और फलस्वरूप देश का सही अर्थों में विकास सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के रास्ते पर चलने से और भ्रष्टाचार मुक्त जीवन व्यतीत करने से ही संभव है.

भस्मे योगेश दीपराज
वरिष्ठ अनुवादक/मंरेप्र/का/नांदेड़

सच्ची मित्रता

एक गाँव में राजीव और सुनील नाम के दो मित्र रहते थे. दोनों साथ पढ़ते, खेलते और हर काम मिलकर करते थे. राजीव बहुत होशियार था लेकिन सुनील साधारण पढ़ाई करता था. फिर भी राजीव कभी उसका मजाक नहीं उड़ाता था और हमेशा उसकी मदद करता था.

एक दिन स्कूल में विज्ञान प्रदर्शनी की घोषणा हुई. दोनों मित्रों ने मिलकर एक मॉडल बनाने का निर्णय लिया. राजीव ने कहा, “हम ऐसा मॉडल बनाएंगे जिससे बिजली बचाई जा सके.” सुनील ने सहमति जताई और दोनों ने जुटकर काम शुरू कर दिया.

काम के दौरान राजीव को कुछ जरूरी काम से शहर जाना पड़ा. वह बोला, “मुझे तीन दिन के लिए जाना होगा, तुम अकेले कैसे कर पाओगे?” सुनील ने आत्मविश्वास से कहा, “तुम निश्चित होकर जाओ, मैं हमारा काम पूरा कर लूँगा.”

राजीव चला गया. सुनील ने दिन-रात मेहनत की. कई बार कठिनाइयाँ आईं, लेकिन उसने हार नहीं मानी. उसने पुरानी चीजों से सामान जुटाया, कई बार असफल हुआ, पर कोशिश जारी रखी. तीन दिन बाद जब राजीव लौटा, तो उसने देखा कि मॉडल तो लगभग तैयार है!

प्रदर्शनी के दिन दोनों अपना मॉडल लेकर पहुँचे. उनका मॉडल “सौर ऊर्जा से चलने वाला पंखा” था, जो कम बिजली में अधिक हवा देता था. शिक्षकों और छात्रों ने उनकी खूब सराहना की. उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला. पुरस्कार लेते समय राजीव की आँखें नम हो गईं. उसने कहा, “यह पुरस्कार मेरा नहीं, मेरे मित्र सुनील की मेहनत और सच्ची मित्रता का है!” सुनील मुस्कुराया और बोला, “और तुम्हारे विश्वास और सहयोग का भी.” दोनों ने सीखा कि सच्ची मित्रता में भरोसा, सहयोग और एक-दूसरे के प्रति सम्मान होता है. ऐसी मित्रता जीवन को सफल और सुखी बना देती है.

सच्ची मित्रता सबसे बड़ी ताकत है.

सीख : सच्ची मित्रता में विश्वास और सहयोग ही सफलता की कुंजी है.

एल.आर. मीना
कनिष्ठ अनुवादक/नांदेड़

****धन्यवाद****